May 2018

RAINBOW SATHI
रेनबो साथी

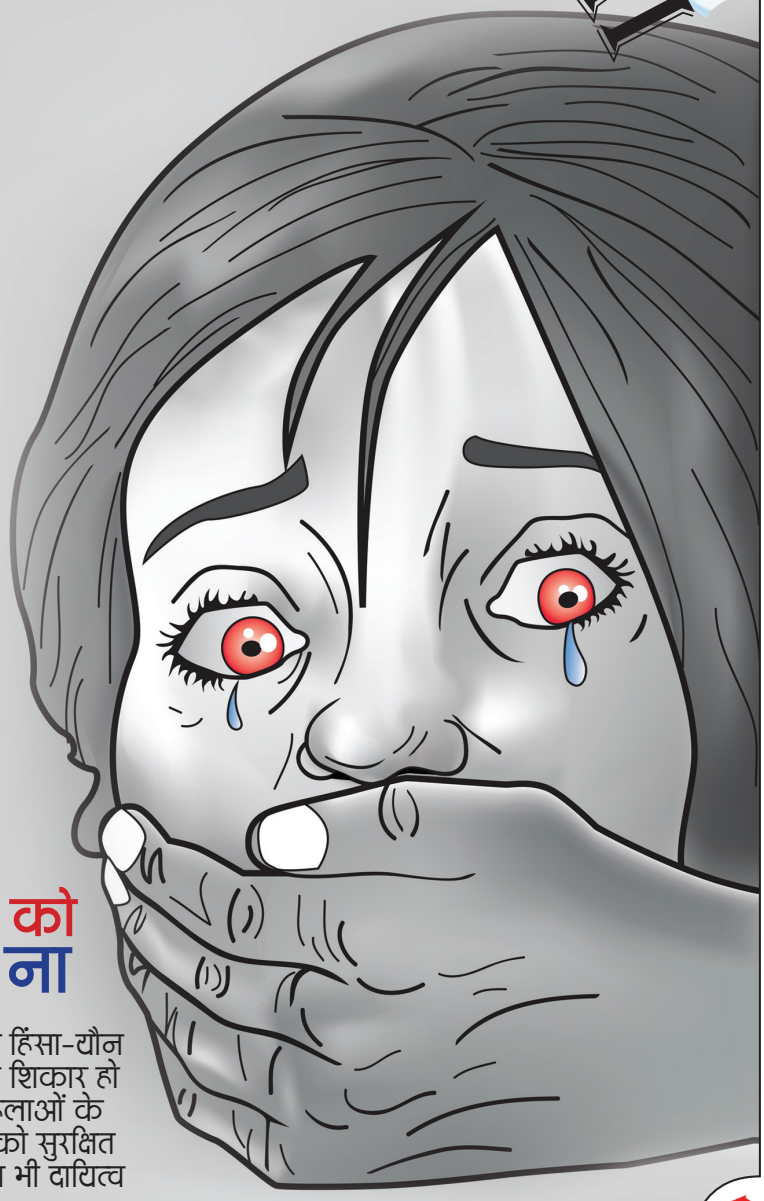

Say NO to violence

GIRLS ARE BECOMING VICTIM OF BRUTAL SEXUAL VIOLENCE. WE HAVE TO MAKE INDIA SAFER FOR WOMEN

हिंसा को कहें ना

बच्चियां बर्बर हिंसा-यौन उत्पीड़न का शिकार हो रही है। महिलाओं के लिए भारत को सुरक्षित बनाना हमारा भी दायित्व

TEAM Work

Year 2, Issue 7, May 2018

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

ADVISIORY BOARD
K. LALITHA, T.M. KRISHNA, MAITREYI PUSHPA, GEETA RAMASWAMY, K. ANURADHA

EDITORIAL BOARD

CHANDA (DELHI)

SAHITYA (HYDERABAD)

SHIVAM (PATNA)

S KUMAR (HYDERABAD)

AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON

CHILD JOURNALIST

SUMMI MUNIR, DELHI

DEEPAK AMAN, DELHI

SABITHA, HYDERABAD

A KUMAR, HYDERABAD

NAGA LAXMI, HYDERABAD

BHAVANI, CHENNAI

KAJAL, PATNA

BINDU, PATNA

SOMNATH CHAUHAN

SAVITRI, BANGALORE

KEERTHANA, BANGALORE

SUBHASHREE, KOLKATA

KABITA, KOLKATA

BAJRANGI, PATNA

MUSKAN, PATNA

AMITA KUMARI, PATNA

ASHA KUMARI, PATNA

SHERNISHA, CHENNAI

CITIZEN JOURNALIST

ARTI SINGHASAN, DELHI
DIVYA, HYDERABAD
CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD
PRIYADHARSHINI, CHENNAI
KHUSHBOO, PATNA
AMRUTA, BANGALORE
KANCHAN PASWAN, KOLKATA

SUPPORT TEAM

RAJESHSREE, KOLKATA
SAMAD S.A, HYDERABAD
SHINY VINCENT, BANGALORE
A. ANANDARAJ, CHENNAI
NATHASHA CHOUDHARY, PUNE
BABU S, HYDERABAD
ROBIN, DELHI
SUDHA RANI, HYDERABAD
VISHAKA, PATNA

Edit support: Mukul Vyas

Design: ROHIT KUMAR RAI

Editor's Column

हम बोलें दुनिया सुने...

दोस्तो

हम सब अपने जीवन, अपने समाज और अपने देश को सुंदर और बेहतर बनाने के सपने के साथ बड़े होते हैं। धीरे-धीरे हमारे सपने बड़े होते जाते हैं, इसमें कई अलग सपने जुड़ते जाते हैं और एक बड़ा साझा स्वप्न तैयार हो जाता है। इस सपने को पूरा करने में हम सब लग जाते हैं और दुनिया को बीते हुए कल से बेहतर बनाने की लड़ाई जिंदा रहती है। ऐसा ही एक सपना है, बच्चियां सुरक्षित हों, खुशहाल हो, मस्ती में झूमते हुए बड़ी हों और ताकतवर बने। बच्चों— खासतौर से लड़कियों और महिलाओं के लिए अपराधमुक्त समाज बनाना, मानवता को बचाने की दिशा में पहला कदम है।

लेकिन हम इसमें नाकाम साबित हो रहे हैं। भारत पूरी दुनिया में महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित देश के तौर पर सामने आया है। हाल ही में थॉमस रॉयटर्स फाउंडेशन के सर्वे में पूरी दुनिया में अगर कहीं महिलाएं-लड़कियां सबसे अधिक असुरक्षित हैं, तो वह भारत है। भारत सरकार ने इस रिपोर्ट को मानने से इनकार कर दिया है, लेकिन हम खुद देख रहे हैं बच्चियों और महिलाओं पर बर्बर अत्याचार, यौन उत्पीड़न, बलात्कार की घटनाओं में भयानक इजाफा हुआ है। जम्मू-कश्मीर की आठ साल की मासूम बच्ची आसिफा के साथ जो हुआ, उसने मानवता को शर्मसार कर दिया। बकरवाल समाज (घोड़ा-खच्चर पालने वाली घुमंतू समुदाय) की इस बच्ची के साथ कई दिनों तक बलात्कार करने के बाद उसकी नृशंस हत्या कर दी गई। उसके बाद जो हुआ वह और ज्यादा बर्बर था। बलात्कारियों को बचाने के लिए एक राजनीतिक दल के लोगों ने जलूस निकाले। लेकिन पूरे देश में आसिफा को न्याय दिलाने के लिए लोग सड़कों पर उतरे। हर जगह हम सब - रेनबो होम्स के साथी भी उतरे। उसी समय यह बात भी सामने आई कि बलात्कार को मौत की सजा से जोड़ने से न्याय नहीं मिलेगा, बल्कि यौन हिंसा की शिकार बच्चियों की जिंदगी पर और अधिक खतरा हो जाएगा। हाल यह है कि पोस्को कानून (बच्चों को यौन हिंसा से सुरक्षित रखना-**Protection of children from sexual offence**) का ही सही ढंग से पालन नहीं होता। जो मामले दर्ज होते हैं, उनमें से ज्यादातर में अपराधी बरी हो जाते हैं। सजा मिलने की दर बहुत कम है। दोषियों के मन में कानून और सज़ा का खौफ नहीं है। इसीलिए तकरीबन रोज बच्चियों पर यौन उत्पीड़न की खबरें हमारे दिल को दहला रही है।

हिंसा के इस माहौल के खिलाफ हम एक हैं। हमारे सपना, हमारा लक्ष्य सुरक्षित समाज है, जिसकी नींव बराबरी और समानता पर हो और जहां किसी भी तरह का भेदभाव न हो। है न दोस्तो! सुरक्षा हमारा हक है, और इसे लेकर रहेंगे।

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak world listens

FRIENDS

We grow with dream to make our life, our society and our country beautiful and better. As we grow our dreams grow, expands and become collective. And thus fight to make a better place, keeps alive and kicking. We have dream that girls should be safe, happy and grow in cheerful-vibrant surroundings. They should become powerful. It is crystal clear, if we want to save humanity then our society should be free from crimes against children especially girls and women.

Sadly we are terribly failing to achieve this. India has become most unsafe country for women in whole world. Recently Thomson Reuters Foundation in its survey declared that India is most dangerous place for women, though Indian government has refuted this survey, but reality is before us. Almost daily we hear gruesome incidents like Kathua of violence on girl child.

More horrifying was when group of people associated with political right wing party came openly in support of rapist. But there was huge uproar across the country and people including children came to street demanding justice for Asifa. We, as Rainbow Homes children also joined the protest across the country. Government announced death penality in Rape cases against girl child. There were strong voices against this move as apprehensions were raised thatit will worsen then situation and girl child will be killed after the sexual assault. Especially when we know conviction rate in cases related to POSCO (protection of children from sexual offence) act is dismally low. Culprits are roaming free, they are not afraid of rule of law. As a result daily we are hearing horrifying cases of sexual violence on girl child.

We strongly strongly condemn violence. Our dream is of save, secured, equal, discrimination free society. Safe society is our right and we will fight for it. Are you ready Friends…Let s march on.

WE SHALL FIGHT,
WE SHALL WIN!!!

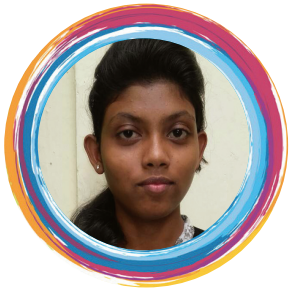

Kabita Mondal
Class-XII, 18 years
Loreto Rainbow Home,
Dharamtala, Kolkata

नए जीवन की शुरुआत

पूजा ने पांच वर्ष की उम्र में अपने पिता को खो दिया था। पिता को खोने के बाद उसकी मां ने सड़कों से कचरा बीन कर खाने का प्रबंध किया। कभी-कभी पूजा भी कचरा बीनने के लिए अपनी मां के साथ जाने लगी। उनके पास रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं था। वे फुटपाथ पर ही जीवन बिताते थे। पेट की भूख मिटाने के लिए उनके पास पर्याप्त भोजन नहीं था। एक दिन उसकी मां बीमार पड़ गई। उसके पास मां के इलाज के लिए पैसे नहीं थे। पैसे जुटाने के लिए एक दिन वह अकेले ही कचरा बीनने चली गई। उस दिन एक घटना ने उसका जीवन बर्बाद कर दिया। उसके साथ बलात्कार किया गया। एक महिला ने उसे सड़क पर खून से लथपथ देख कर अस्पताल पहुंचाया। ठीक होने के बाद पूजा ने उस महिला से कहा कि मुझे मेरी मां के पास ले जाओ लेकिन वह अपना सही पता नहीं बता पाई क्योंकि उसका कोई घर नहीं था। एक दिन उसे एक आदमी को बेच दिया गया। उसने महसूस किया कि यह जगह उसके लिए सुरक्षित नहीं है। वह वहां से भाग कर उसी फुटपाथ पर पहुंची जहां उसकी मां रहती थी। उसकी मां नही मिली। एक स्थानीय व्यक्ति ने उसे बताया कि बीमारी की वजह से इसकी मां ने दम तोड़ दिया था। पूजा बुरी तरह से टूट गई। उसमें जीने की आस खत्म हो गई लेकिन भगवान हमेशा जरूरतमंद की मदद करता है। वह एक महिला के पास गई जो जरुरतमंदों की मदद करती है। पूजा को लोरेटो रेनबो होम ले जाया गया जहां उसके नए जीवन की शुरुआत हुई। उसे सुरक्षित आश्रय मिला,समुचित भोजन मिला और मां भी मिल गई। उसे स्कूल में भर्ती किया गया जहां उसकी पढ़ाई बढ़िया चल रही है। पूजा एक अच्छी इंसान बनना चाहती है। वह रेनबो किड्स के लिए काम करना चाहती है। वह सभी को स्व निर्भर बनाने के लिए शिक्षा के नए अवसर उत्पन्न करना चाहती है और यह बताना चाहती है कि जीवन में कठिनाइयों से कैसे निपटना चाहिए।

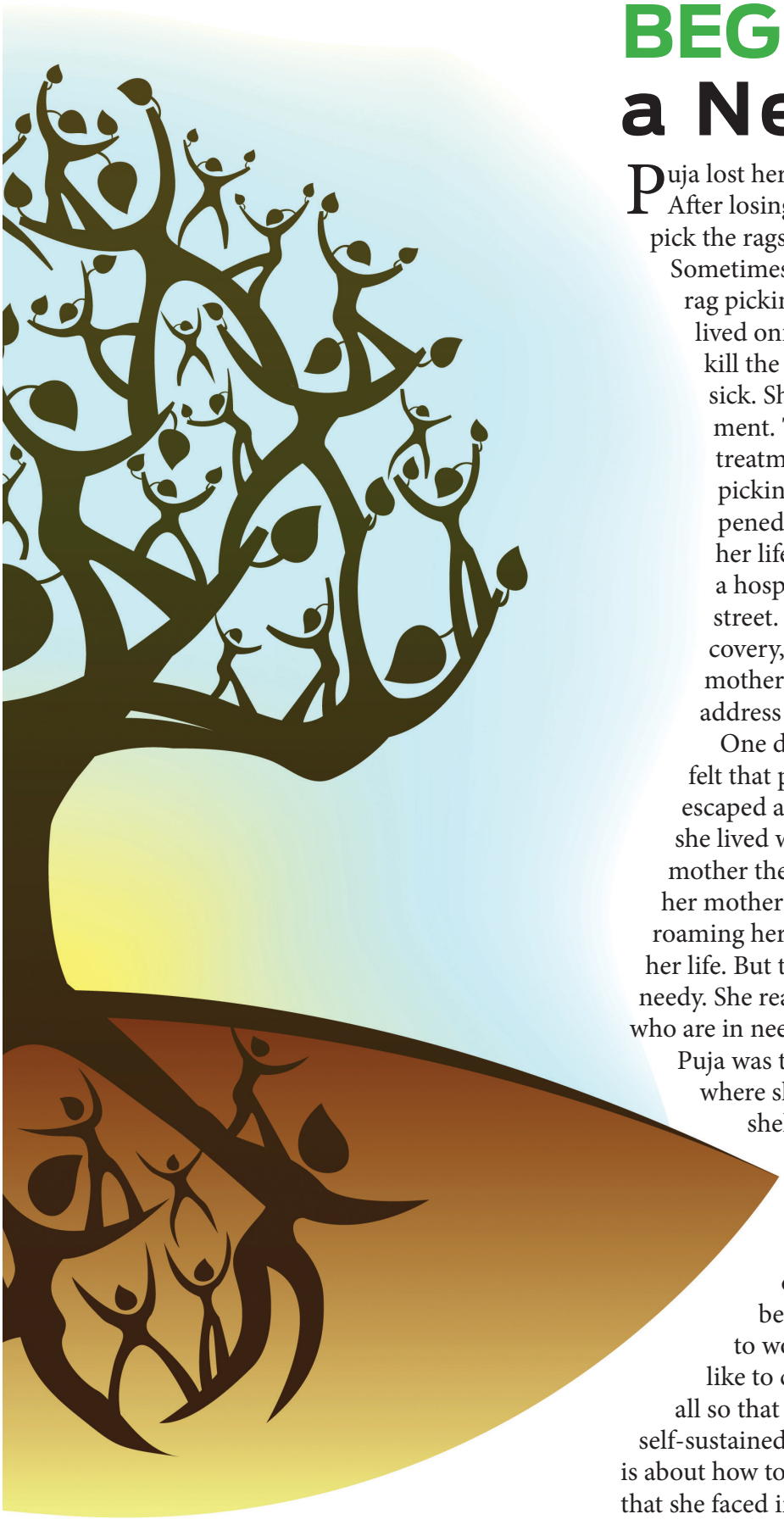

BEGINNING a New Life

Puja lost her father when she was five years old. After losing her father, her mother used to pick the rags from the streets and arranged food. Sometimes Puja accompanied her mother in rag picking. They didn't have shelter, they lived onfootpath,not having enough food to kill the hunger. One day her mother became sick. She didn't have money for her treatment. To arrange money for her mother's treatment, Puja one day alone went for rag picking. And that day one incident happened with her which totally destroyed her life. She was raped. She was brought to a hospital by a lady who found her on the street. She was bleeding badly. After her recovery, she asked that lady to take her to her mother. But she was unable to tell the proper address to her as she had no home.

One day she was also sold to a man. Puja felt that place was not safe for her. So, she escaped and came to same footpath where she lived with her mother. She didn't find her mother there.A local person informed her about her mother's death due to illness. Puja started roaming here and there. She lost all hopes about her life. But there is god who always helps the needy. She reached to a lady who helps the persons who are in need.

Puja was taken to Loreto Rainbow Home where she started a new life. She got a safe shelter, adequate food and found her mother in the caregivers home. Puja received so much love and care which she never expected. She was admitted in school.Puja is doing well in studies. She wants to be a good person in future and wants to work for the Rainbow Kids. She also like to create education opportunities for all so that they become self-dependent and self-sustained. The message that she wants to give is about how to cope with the difficulties in the life that she faced in her past.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

लड़कियों और लड़को के अधिकार बराबर हैं

हमारे बाल पत्रकारों सोमनाथ,देवा, बापू, विशाल, संजना, कल्याणी और दुर्गा ने बाल यौन उत्पीड़न विषय पर पुणे की महापौर मुक्ता तिलक का इंटरव्यू लिया।

संजना/विशाल/देवा: बच्चियों के खिलाफ यौन हिंसा में वृद्धि हुई है। इसके क्या कारण हैं?

महापौर: बच्चियों के खिलाफ यौन हिंसा में वृद्धि के पीछे कई कारण हैं। यौन आनंद, क्रोध, ताकत, मनोरोग और पीड़िता के प्रति रवैया इसके कुछ कारण हैं। लड़की को यौन उत्पीड़न से खुद की रक्षा करनी चाहिए और यदि उत्पीड़न होता है तो आपको पुलिस और चाइल्डलाइन से मदद लेनी चाहिए। अभिभावकों, शिक्षकों और अन्य लोगों से, जिन पर आप भरोसा करते हैं, उत्पीड़न संबंधी मामले शेयर करने चाहिए।

कल्याणी/दुर्गा: लड़कियों के साथ अलग ढंग से व्यवहार क्यों किया जाता है ?

महापौर: 21वीं सदी में लड़कियों और लड़कों के अधिकार बराबर हैं। लैंगिक समानता है। लड़कों और लड़कियों के पास अपने विकास के लिए बराबरी के अवसर हैं लेकिन शिक्षा और जागरूकता के अभाव में हम अक्सर उत्पीड़न के विभिन्न रूपों के शिकार हो जाते हैं। लड़कियों के नाते हमें अपनी सुरक्षा के हकों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और हमें इन अधिकारों का उपयोग करना चाहिए।

बापू / सोमनाथ: शहर को सेफ बनाने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

महापौर: अन्य शहरों की तुलना में पुणे शहर लड़कियों के लिए बहुत सेफ है। यहां पुलिस संवेदनशील है।लोग शिक्षित और जागरूक हैं। लैंगिक समानता है। शिक्षा में समान अवसर दे कर,समान कार्य के लिए समान वेतन देने वाले रोजगार पैदा करके तथा वित्तीय मदद के लिए पुरुषों पर निर्भरता कम करके शहर को महिलाओं के लिए सेफ बनाया जा सकता है।

Girls should protect themselves from all types of abuses

Our Child journalists Somanth, Deva, Bapu, Vishal, Sanjana, Kalyani, Durga interviewed Pune City Mayor Mukta Tilak on Child Sexual Abuse.

Sanjana / Vishal / Deva: Sexual violence has increased against the girl child? What are the reasons for it ?

Mayor: There are many reasons for the increase in sexual violence.Some of the reasons are sexual pleasure,anger,power,psychopathy and attitudes towards the victim. But a girl should protect herself from abuse.She should be aware about such abuse.In case an abuse occurs you should take the help of police, Childline.Share it with people you trust such as parents and teachers.

Kalyani / Durga: Why are girls treated differently?

Mayor: In the 21st century we all have equal rights

as girls and boys.There is gender equality where both boys and girls have access to equal opportunities for their growth and development but due to lack of education and awareness we often become victims to different forms of abuse. We as girls should be aware about our rights for our safety and protection and should exercise those rights that have been given to us.

Bapu / Somanth: What steps should be taken to make our city safe?

Mayor: In comparison to other cities Pune City is quite safe for girls, as the police here is sensitive.People are educated and aware, there is gender equality. City can be made safe for women by providing equal opportunities in education,creating jobs which gives equal wages for equal work and giving legal rights to women to reduce their dependence on men for financial support.

Young Guest

Royal Valmiki
Class 4th B
S.D. Public School,
New Delhi

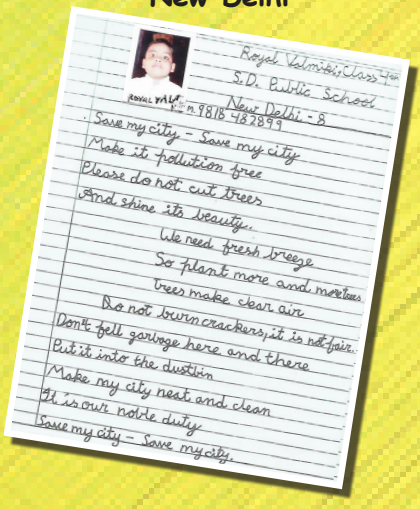

Royal Valmiki, Class 4th
S.D. Public School
New Delhi - 8
M. 9818 482899
Save my city - Save my city
Make it pollution free
Please do not cut trees
And shine its beauty.
We need fresh breeze
So plant more and more trees
Trees make clear air
Do not burn crackers, it is not fair.
Don't fell garbage here and there
Put it into the dustbin
Make my city neat and clean
It is our noble duty
Save my city - Save my city.

SAVE MY CITY

Save my City – Save my City
Make it pollution free
Please do not cut trees
And shine its beauty

We need fresh breeze
So plant more and more trees
Trees make clear air
Do not burn crackers, it is not fair

Don't fell garbage here and there
Put it into the dustbin
Make my city neat and clean

It is our noble duty
Save my City - Save City.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

लड़कों-लड़कियों का दर्जा हो बराबर

Nagalaxmi, a child journalist from **Asritha Rainbow Home** interviewed two children of **APMWS Rainbow home**

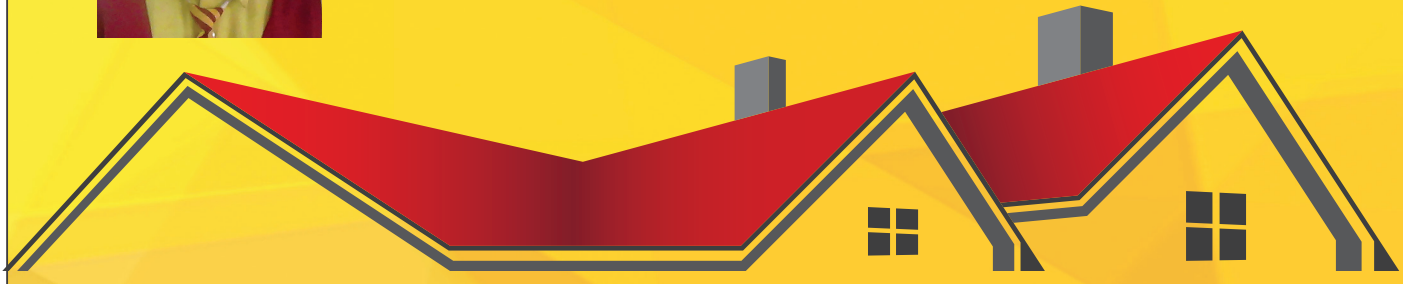

Shahana, 10th std
APMWS home, Hydrabad

What was the reason for your coming to Rainbow Homes?

When I was with my family, I did not attend school. We faced many problems in my childhood. My father passed away when I was very young and we lived with my Grandfather. My elder brother didn't take care of me. Actually nobody cared about me. However, after I came to APMWS I developed interest in studies.

If you face any violence, what will you do to stop it?

We should call Child line 1098, take support from the elders. We shall also inform our neighbours. We shall approach nearby police station or else dial 100 police helpline. If I see a police person nearby, I will approach him or her. In case of any health emergency, we should first use should use first-aid, then take to nearby hospital or we can call on 108 number for ambulance.

Is there equality between boys and girls?

No. Girls and boys in this society should be given equal rights. More respect is given to male because he is considered as earning member. Regarding female, she is considered as financial burden as dowry is to be given to her at the time of marriage. In society, girls are not treated equally in any fields.

आपके रेनबो होम्स में आने की क्या वजह रही ?

मैं जब अपने परिवार के साथ थी तो स्कूल नहीं जाती थी। बचपन में हमें कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। मैं जब बहुत छोटी थी, तो मेरे पिता गुजर गए और फिर हमें अपने दादा के साथ रहना पड़ा। मेरे बड़े भाई मेरा ठीक से ख्याल नहीं रखते थे। दरअसल कोई भी मेरा ध्यान नहीं रखता था। फिर जब मैं एपीएमडब्लूएस आई तो मेरा मन पढ़ाई में लगने लगा।

अगर आप किसी हिंसा का शिकार होती हैं, तो आप क्या करेंगी ?

तब हमें चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 पर कॉल करना चाहिए, बड़ों की मदद लेनी चाहिए, पड़ोसियों को खबर करनी चाहिए। फिर हमें पास के पुलिस स्टेशन जाना चाहिए या 100 नंबर पर डायल करना चाहिए। अगर मुझे कोई पुलिस कर्मी पास में नजर आ जाए तो मैं उसकी मदद लूंगी। अगर स्वास्थ्य संबंधी कोई दिक्कत होती है तो हमें पहले फर्स्ट-ऐड देना चाहिए, फिर पास के अस्पताल ले जाना चाहिए या 108 नंबर पर डॉयल करके एंबुलेंस बुला लेनी चाहिए।

क्या लड़कों व लड़कियों के बीच बराबरी है?

समाज में लड़कों व लड़कियों को बराबरी का दर्जा होना चाहिए। लेकिन ऐसा होता नहीं। लड़कों को ज्यादा अहमियत दी जाती है क्योंकि उन्हें कमाऊ माना जाता है। लड़कियों को बोझ माना जाता है क्योंकि उनकी शादी के समय दहेज देना होता है। ज्यादातर मामलों में लड़कियों को लड़कों के बराबर नहीं समझा जाता है।

ALL GIRLS SHOULD STUDY WELL

Ashwini
10th Std
APMWS home, Hydrabad

Why should we not marry girls at a very young age?

Girls should be married only after attaining the age of 18. Marrying them at very young age will affect her mentally. Girls face many problems in their household affairs and health wise also. They will not be able to study and hence can't do any job. She will become economically dependent on the husband. If any problem comes, her life will get disturbed as she haven't had full education or learned any skill to live an independent life. Then by conceiving at a very young age girls have to face many problems especially on their health. Their organs will not be fully developed. During and after delivery also they have to face many issues— financially as well as in bringing up the child.

What would you do to make yourself proud in this generation?

Girls should study well. If a girl studies well, she gets good respect from the society. If she achieves her goals it will make her feel proud. If I study well, I also will earn the respect and feel pride. Girls should follow the advice of the elders in studies and making decisions. I feel very proud that I participated in Rangoli competition conducted at APMWS. If equal rights are given to the women in this society, all girls will do further better and become contributing citizens.

हमें कम उम्र में लड़कियों की शादी क्यों नहीं करनी चाहिए?

लड़कियों की शादी 18 साल की उम्र के बाद ही की जानी चाहिए।उन्हें कम उम्र में ब्याह देने का उनपर दिमागी रूप से काफी असर पड़ता है। लड़कियों को परिवार में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और अपनी सेहत के लिए भी। चूंकि वे पढ़ाई नहीं कर पाती हैं इसलिए कोई नौकरी नहीं कर पातीं। वह आर्थिक रूप से अपने पति पर निर्भर रहती है। अगर कोई मुश्किल आती है तो उसकी जिंदगी अस्त-व्यस्त हो जाती है क्योंकि वह न तो पढ़ी-लिखी होती है और् न ही उसके पास आत्मनिर्भर जिंदगी जीने के लिए कोई कौशल ही होता है। बहुत कम उम्र में मां बन जाने से भी कई मुश्किलें होती हैं। उनके अंदरुनी अंग पूरी तरह से विकसित नहीं होते हैं। मां बनने के समय और फिर बाद के दौर में भी मुश्किलें रहती हैं। बच्चे का लालन-पालन भी मुश्किल होता है।

आप इस दौर में ऐसा क्या करेंगे जिससे आपको खुद पर गर्व हो सके?

लड़कियों को खूब पढ़ना चाहिए। अगर लड़की पढ़ी-लिखी हो तो उसे समाज में सम्मान मिलता है। फिर जब वह अपने लक्ष्य को हासिल कर लेती है तो गर्व महसूस करती है। अगर मैं अच्छा पढ़ूंगा तो मुझे भी सम्मान मिलेगा और मुझे गर्व होगा। लड़कियों को पढ़ने और् फैसले लेने में बड़ों की भी सलाह लेनी चाहिए। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैंने रंगोली प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। अगर महिलाओं को समान अधिकार दिए जाएं तो वे नागरिक के तौर पर बेहतर योगदान दे सकेंगी।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

MMS और अश्लील वीडियो यौन हिंसा के दोषी हैं

संपादक—हमने यह फैसला किया कि नाबालिग लड़कों से बातचीत करनी जरूरी है ताकि ये बता चले कि आखिर वे यौन अपराधों में क्यों लिप्त हो रहे हैं, क्यों आखिर ये अपराध बढ़ रहे हैं। इसके बारे में सीधे उनसे बातचीत की जाए।

पटना के **शिवम** ने तीन लडकों **रज़ा**, **श्रवन** और **विकी** से मिला औरे उनसे सेक्सुअल क्राइम के विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया की जो बच्चे 12 से 18 के उम्र के होते है वे इस तरह के गलतियां करते हैं। उनकी बातचीत ऐसी रही:

लड़कों के अंदर इतनी हिंसात्मक भावना क्यों होती है ?

रजा: MMS देखने पर लड़के जो 18 साल के हैं वे लड़कियों के प्रति सेक्सुअली आकर्षित हो जाते हैं। दो लड़कों की बातचीत में ज्यादातर सेक्स पर बात होती है। बातचीत करने के क्रम में MMS का भी चर्चा करते हैं। वे बातचीत करते हुए इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि वे एक-दूसरे के साथ ही गलत हरकत करने लग जाते है। इसी में छोटे बच्चों- बच्चियों के साथ इस तरह के गलत काम करने लग जाते है।

लड़के क्यों इस तरह के क्राइम करते है ?

श्रवन: जब लड़के फ्री होते है, उनके पास कुछ काम करने को नहीं होता तभी वे सेक्स के बारे में सोचने लग जाते हैं। इस तरह की सोच उन्हें गलत हरकत करने को उत्साहित करती है ।

अकेली लड़की को देखकर लड़के क्या सोचते हैं?

शिवम्: उस समय लड़का उस लडकी के साथ सिर्फ सेक्स के बारे में सोचने लग जाता है क्योंकि उस समय रात में सड़क पर लड़की अकेली होती है।

ऐसा क्राइम करने के पीछे उनकी क्या मानसिकता होती है ?

विकी: लड़के ज्यादातर इस तरह का सेक्सुअल क्राइम, वीडियो देखने के बाद करते है क्योंकि वे उत्तेजित हो जाते हैं।

क्या उन्हें एसा काम करने में डर नहीं लगता?

विकी: उस समय उनका दिमाग अलग होता है इसलिए उन्हें एसा क्राइम करने में डर नहीं लगता है। उन्हें डर नहीं लगने का एक ओर कारण है क्यों की उस समय लड़का खूद को खो कर सिर्फ सेक्स के बारे में हे सोचने लग जाता है।

MMS and Porn videos are inciting crime

Editor –We decided to have dialogue with adolescent boys to find out why boys are getting involved in sexual crimes against girls. There is need to have direct communication with them.

Shivam from Patna met with three boys (Raja, Shravan and Vickey) to discuss on the topic "sexual crime" .They shared what moves inside boys mind and WHY-- Why there is so much feeling of violence in boys?

Raja: Watching MMS boys of 18 years and above get sexually attracted toward girl and tend to commit sexual crime. When two boys gossip with each other they usually discuss sex and in that reference they also talk about MMS. Along with it they also get so much excited that they start doing sex among themselves only whereas some boys try to do with small girls.

Why boys do such type of crime?

Shravan: When boys are free and have no work to do then only they think about sex. This type of thought brings pleasure to them along with a feeling of doing sex.

If a small girl is seen on the road at night then what a boy think about her?

Shivam: At that time a boy generally think of doing sex with that girl as she is alone at night on the street. That's how crime happens.

What is the mental condition behind doing such type of sexual crime?

Vickey: Boys generally do such type of sexual crime as they use to watch porn videos which fill them with excitement.

Do they fear in doing such activity?

At that time there mindset is completely different. They do not fear in doing such crime activity..

POLICE, SOCIETY AND FAMILY SHOULD BE PRO-ACTIVE

Why crime against girl child are increasing across country, what are the legal lacunas. In Patna we **Kajal** (class 9, Kilkilahat Rainbow), **Asha**(class 7, Ghronda Rainbow Homes) and **Bindu** (class 10, BGVS) met with Advocate **Vikas kumar Pankaj** to discuss about on this.

What is the full form of POCSO ?

PROTECTION OF CHILDREN FROM SEXUAL OFFENSES ACT

How many sections are there in this act?

There are 46 sections.

What Police was done in Asifa case?

Firstly FIR was lodged then Police investigation was held then Charge sheet issued in the court. Supreme Court shifted this case to Chandigarh for fair trial as locally there was huge resentment. Religious sentiments were raised and there was fear of violence. After Asifa's matter a law was made that if a girl who is less than 12 years is raped then that victim will get penalty .

What is the problem in getting Justice from the court?

Attitude. Illiteracy is the most important reason along with it behaviour of society and family is also responsible. Taboo is there that if we complain then bad name will come to family. So because if they will not support then how the child will justice. Parents are required to take this case in court.

Champa Kumari
class-8th,
Aman Rainbow Home, Bihar

स्ट्रीट चिल्ड्रन दिवस पर बराबरी और समानता की उठी मांग

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के अवसर पर 12 अप्रैल को बाल्यमित्र नेटवर्क ने हैदराबाद के सुंदरैया विज्ञान केंद्रम में एक गोलमेज सम्मलेन का आयोजन किया जिसमें करीब 30 संगठनों के 100 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमे रेनबो होम्स के कर्मचारी,बच्चे,चाइल्ड एक्टिविस्ट और मानवाधिकार कार्यकर्ता शामिल थे। प्रमुख अतिथियों में एमवीएफ के प्रो.रामा मेल्कोटे,वेंकट रेड्डी और तेलंगाना के मानवाधिकार फोरम के अध्यक्ष श्री जीवन कुमार सम्मिलित थे। इस अवसर पर सभी ने अपने विचार रखे। बच्चों ने बताया कि सडकों में बसर करते हुए उन्हें कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वक्ताओं ने कहा कि अभी हैदराबाद में 26500 बच्चे और हैं जो सड़कों पर जी रहे हैं। इनकी तरफ तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र कंसोर्टियम ने स्ट्रीट चिल्ड्रन की दशा पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि सरकार और समाज को निम्नलिखित 4 सिद्धांतों का पालन करना चाहिए।

1. समानता के लिए प्रतिबद्धता
2. प्रत्येक बच्चे की सुरक्षा
3. हरेक को सेवाओं की सुलभता
4. नए समाधान उत्पन्न करना

सभी की इस बात पर एक राय थी कि इन बच्चों को अधिक लाभ पहुंचाने के लिए बजटीय आवंटन बढ़ाने के लिए सरकार पर दबाव बढ़ाने की आवश्यकता है। सम्मेलन में प्रस्ताव रखा गया कि बैठक में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का एक कार्य दल बने और सरकार से बच्चों के जन्म,आधार , कम्युनिटी व नेटिविटी सर्टिफिकेट देने के लिए कहा जाए जिनके अभाव में बच्चों को अपने अवसर गंवाने पड़ रहे हैं। छह सदस्यों ने इस दल का सदस्य बनने के लिए स्वेच्छा से अपने ना दिए। अब इस एजेंडे को आगे बढ़ाया जा रहा है

On Street children day Demand for just and equatible policies

On the occasion of International Street Children Day ,Balyamitra Network convened a round table conference on 12th April, at Sundaraiah Vignana Kendram Hyderabad.Around 100 people from around 30 organizations attended it including Child Rights and Human Rights activists,staff and children of Rainbow homes. Prominent among the guests were Prof. Rama Melkote, Mr. Venkat Reddy from MVF and Mr. Jeevan Kumar, President ,Human Rights Forum, Telangana .All shared their experiences and described the deprivations they had undergone on streets. They demanded for reaching out to remaining 26,500 children counted in street situations in Hyderabad. UN consortium in the year 2017 made a general comment on the situation of street children declaring out the following 4 principles to be followed by the Governments and Society.

1. Commit to equality, **2.** Protect every child, **3.** Provide access to services, **4.** Create new solutions. All opined that still more concerted efforts are needed to put pressure on the Government fo mobilizing more budgetary allocations for the welfare of these children. It was proposed to form a working group out of the attendees and lobby with the Government for the child entitlements like issuance of Birth, Aadhar, Community and Nativity certificates.Due to lack of theses certificates children are suffering badly by losing opportunities. 6 members volunteered themselves to be part of the group and the agenda is being taken forward.

D.Mounika, 1st Inter,
CEC,Telugu Medium,
Aashray Balatejassu
Rainbow Home, Hyderabad

SINCERE EFFORTS NEEDED TO STOP SEXUAL VIOLENCE!

Sexual violence means committing an offence of sexual nature against any person. In India women are often subjected to such kind of violence. Women and girls are afraid of going to college, schools and offices, and even outside of the home. Boys harass the girls in the name of love. If the girls reject the boy's proposal of so-called love they mercilessly attack girls with acids, even killing them brutally. Such incidents are reported daily in the mainstream media. Women are trafficked in the guise of employment. All girls and women are prone to violence, irrespective of their age. India got freedom in 1947 but women in India are yet to get freedom.

Ironically, despite this hue and cry about human trafficking, many political leaders, people's representatives and bureaucrats have been found involved in such activities. Due to their involvement, no genuine and necessary action is being taken against the human traffickers.

Gandhi ji once said that, "We can say that India has attained freedom only when we will be able to make sure that a woman can reach home safely even in the midnight." Obviously, if we want to achieve that situation in India than a lot need to be done.

We shall encourage women to participate in all sectors. Society should condemn violence against women. Government should take appropriate action against the culprits. Police administration should protect and respond to the women positively whenever a woman is in any sort of threat. Many laws have been enacted in recent times, now Government should provide necessary mechanism to implement these laws.

यौन हिंसा रोकने के लिए कड़े कदम जरूरी

यौन हिंसा का मतलब है किसी भी व्यक्ति के खिलाफ यौन प्रकृति का कोई भी उत्पीड़न। भारत में महिलाएं अक्सर इस तरह की हिंसा का शिकार होती हैं। इसके चलते महिलाएं व बच्चियां स्कूल, कॉलेज व दफ्तर जाने और यहां तक कि घर के बाहर निकलने तक से घबराती हैं। लड़के प्रेम के नाम पर लड़कियों को परेशान करते हैं। अगर लड़कियां ऐसे लड़कों के कथित प्रेम-प्रस्तावों को नकार देती हैं तो कई बार लड़के बेरहमी से लड़कियों पर तेजाब से हमले तक कर देते हैं और इसमें उनकी जान तक चली जाती है। रोजगार के नाम पर महिलाओं की तस्करी होती है। महिलाएं चाहे किसी भी उम्र की हों, वे सभी हिंसा का शिकार हो जाती हैं। हमारे देश को अंग्रेजों से आजादी भले ही 1947 में मिल गई हो, लेकिन भारत की महिलाओं को अब तक आजादी नहीं मिल पाई है।

अफसोस की बात यह है कि इतना कुछ कहने-सुनने के बाद भी कई राजनीतिक नेता, जन-प्रतिनिधि और अफसर तक महिलाओं की तस्करी में शामिल पाए जाते हैं। उनके शामिल होने की वजह से औरतों के व्यापार के खिलाफ कभी कोई गंभीर कदम नहीं उठाया जाता है।

गांधी जी ने एक बार कहा था, 'हम यह तभी कह सकेंगे कि भारत को आजादी मिल गई है जब हम यह सुनिश्चित कर लें कि कोई भी महिला आधी रात को भी सुरक्षित रूप से आ-जा सकती है।' जाहिर है, अगर हम भारत में यह स्थिति लाना चाहते हैं तो अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। यह तभी हो सकेगा जब हम महिला का हर स्थिति में सम्मान करेंगे। समाज को महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए। सरकार को दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। कई बड़े-बड़े कानून बना तो दिए गए हैं लेकिन अब सरकार को उन्हें पूरी तरह से लागू करने की दिशा में कुछ करना चाहिए।

Justice For Asifa

➲ We cannot bear injustice, we will raise our voice..Hyderabad Rainbow home children protested at mother Teresa statue, Secundarabad.

➲ Bangaluru Rainbow children joined their voice which is coming from across the country—We want safety

➲ we cant be just spectator of injustice, we want to fight for justice…

➲ Listen to our cry, our heart bleed , our confidence is shattered when we hear this kind of brutal violence

➲ Hyderabad children stood in solidarity of Asifa and raised voice against Unnao rape case also

➲ We children made posters and made sure that our voice is heard.

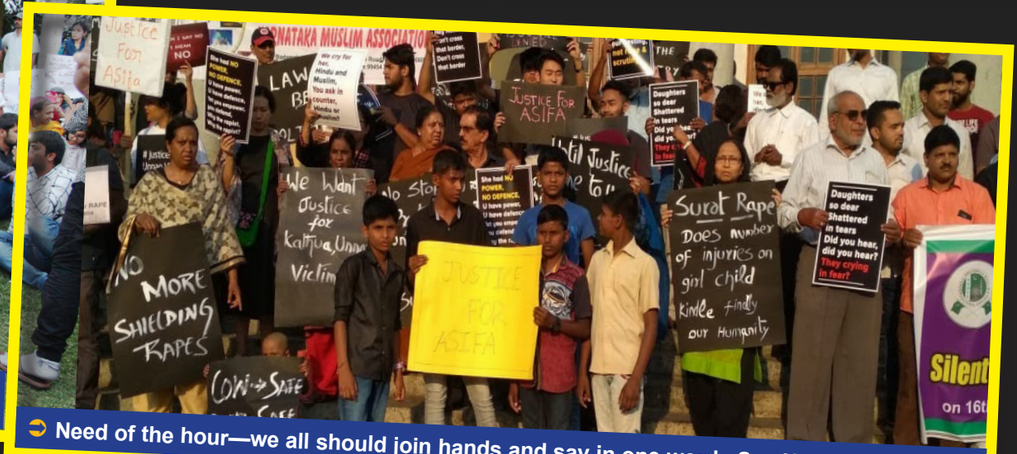

➲ Need of the hour—we all should join hands and say in one word –Say No to violence

ALL ABUSES SHOULD BE REPORTED IMMEDIATELY

Vandana Sharma is an advocate practicing criminal matrimonial law since 1998. She was working at Tees Hazari courts in Delhi till 2011. After that she worked in Saket courts from 2015 to 2018 as legal aid counsel in mahila court. She also worked as a remand advocate. In 2018 she joined child welfare committee, in which she is currently posted at Kalkaji. Excerpts from her interview done by **Summi Munir**:

Q: What does POCSO act means?

This is an abbreviation of Protection of Children from Sexual Offences act. In our constitution right for the safety for children is enshrined but in our penal system there was no law for crimes against children. Hence later policy makers realized that we need a specific law for children because many sexual offences are committed inside the boundary walls of house by mostly known and on times by unknown persons. In this law children mean the boys and girls below 18 years. Thus, this law is especially for the children below 18 years.

Q: Why conviction rate is so low?

Conviction rate is low as you know this is related to the children. Generally sexual violence happens in very secluded places. Sexual offences like rape do not happen in a crowed place. So not many people are in position to see that. Such incidents happen either within the family, or in school, hospital or at any other place vulnerable for a small child. We have also seen in recent time there is no age leniency as we have seen victims as young as just 8 months or 1 year old. Problem is, such victims are unable to comprehend whatever has happened with them. For conviction the testimonies are very important so is the statement

of the victim. Now since the victims are so young, innocent and vulnerable, they don't know what to say, how to express because they are just a child. The conviction depends on the statement of the child or the victim. For a victim recalling the episode is tough and it is like revisiting the whole trauma of sexual violence all over again. Moreover, many people don't report the incident. Many a times child is unable to say. How can a small child explain? It is very –very difficult for a prosecution to take the statement of the child. But, if there is no trial or statement and no reporting is done, then there is obviously no conviction. That is why conviction rate is so low.

Q: What is general attitude of investigating agencies, especially police?

Nowadays, especially in the metro cities the police is very sensitive. The department tries to create a special juvenile police unit in each police station. All work in such cases is mostly done by the female personnel. The enquiry and approach are all done by police personnel in plain cloths so that kids don't get uneasy with the uniform and remain generally unaware of any police presence. But this type of sensitivity among police force is not there in rural areas. A very special training is needed to handle a child. In bigger metros such trainings are given to the police staff. But overall figure is unfortunately very low for the whole country. They do investigation merely as described in POCSO ACT. First and foremost, reporting of all such incidents is very essential to catch the culprits.

Q: How much supportive are courts?

All district courts in Delhi are now equipped with special witness rooms for vulnerable victims. The norms for this have already been prescribed by the High Court of Delhi. Such rooms are child friendly and work as one-stop point for all requirements pertaining to the case. It is also ensured that the victim doesn't have to come face to face with the accused. In recording such witnesses no officer-police, legal or judicial has to be in uniforms. All support is given to the kid in a very friendly atmosphere. Ideally, there has to be a special POSCO court in every court with special staff, judges and all. They also need to close the case at the earliest.

Q: How important is counselling process?

It is very important at every level right from the moment incident comes to light. Victim should be immediately confined to a person whom he or she is most comfortable with. Then the noting down of the incident should start with thee help of that person. In our country rape is often seen by family of the victim as loss of honour. It needs to be changed. All support is needed for the kid. Here counselling helps. On many occasions, people and family around are unable to bring the child out of trauma, then trained counsellors are needed to handle the situation.

Q: How should family of victim deal with issue?

Firstly, we must change our mind towards sexual offences. Rape is a violent criminal attack on a helpless person. There should be no victim-shaming. Normally, when sexual offences are committed, we start blaming the victim. We must change our attitude toward this. Don't ask too many questions. Don't let victim recall the incident again and again. In cases of child sexual abuse, mostly the culprits are persons closely known to the victim or are family members themselves. Hence the victims need support and safety. For the victims from economically weaker background, family will also need financial support to deal with the whole episode and bring the child back to normal life. That should be taken care of by the state.

Q: Will death penalty help, or it would be more dangerous?

It is a debated issue. Regarding death penalties, there are multiple views in the world. Many countries have abolished the death penalty, while some countries have more cruel and brutal punishments. What we need is a strict and timely legal system. No doubt that rapists are dangerous for the society. Death penalty is given in rarest of rare cases. Moreover, in our legal system, death penalties are always to be ratified by higher courts.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

COUNSELING FOR KIDS IS MUST

Interview of **Ms. Varsha , State coordinator,** Anti child labor and trafficking project, Dept of Labor, Govt of T.S. by **B.Parvati** – XII and **T.Madhuri**, X class, Medibavi Home, Hyderabad

How does abuse happen?

In 83% cases, abusers are known persons. They make friendship with the children buy them things of their liking. In the conversation, they start touching the private parts of the children. The child knows what he is doing but doesn't object to him out of fear.

What is the general attitude of investigating agency especially police?

Children have a feeling that if they complain, they would not be believed as they are small Secondly, they are dependent on elders and don't have freedom and knowledge to go to police and complain and hence lose the drive of complaining.

Generally, abusers tend to create a fear in the victim child saying that if you tell anybody, he would kill her .Out of fear, children get dissuaded from complaining. Police look for evidence and without it, they won't book a case. In these cases, evidence can't be shown unless the victim is examined medically. Police generally tend to favor the elders with an assumption that children lie.

How much supportive are the courts? Environment, questions?

Most CSA cases go unreported in India .India is developing on all fronts, but incidences of CSA are increasing day by day. When Police or court give some strict punishment ,there will be a lot of publicity and condemnations all over but after a gap, again the incidents start rising.

Actually the process of getting justice has to go through so many stages :

How much supportive is the counseling process :

When children share with the parents, they , instead of listening to the child, start finding fault with the child itself. They cross question the child saying why she had gone there, she could have runaway. Instead, parents should take the child into confidence and tell that it is not her fault and pat her for telling out. Child will be in a trauma after such bad incident and reported people should try to keep her happy and divert her thinking from that incident. Take her to child counselor assuage her feelings. Counseling is very much needed which makes the child normal and get her back to her past condition.

Teachers also should tell about what is good touch and bad touch and how to escape from such situations.

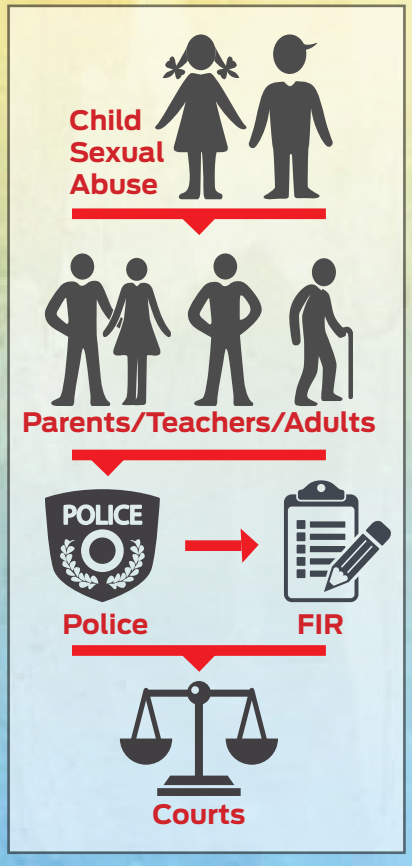

How family of victims sustain?

Family of Victims will also be in a traumatic condition. They should come out of it and lodge a complaint with the Police. They should listen to the child version in free flow way and believe it. They must lodge a complaint in the police station without thinking on the lines of loss of family pride. As a solution to this, complaint can lodged and can be kept secret.

Why conviction rate is low ?

Police are not registering the compliant seriously. In the FIR and charge sheet, they try to favor the perpetrator taking

bribes from them or under some other influence. Courts go by evidence, which in most of the cases, victim fail to produce. There would be a lack of support from the family members as court proceedings are time taking and go for a long period of time. Showing less interest or not attending to court dates or compromising with the accused would result in acquittal of the accused.

How dangerous is the death penalty?

if a person see happening of the CSA, one should stop it there itself as societal monitoring and reaction would be more effective than statutory. People should admonish not only in case of their blood relatives but also for any other child victim. Focus should be more on Prevention than post action. Fast track Courts be initiated to expedite the verdict.

Recently cabinet passed order giving death penalty in case of rape of children below 12 years. Death penalty would be grave as every human being has a right to live and chance to repentance and self modification is denied . There is an apprehension that ,this would lead to rape followed by murder. Hence, it would further aggravate the situation.

बच्चों को दहशत से निकालें

सुश्री वर्षा, राज्य समन्वयक, बाल श्रम व तस्करी निरोधक प्रोजेक्ट, श्रम विभाग, तेलंगाना सरकार बी. पार्वती,12वीं और टी. माधुरी, 10वीं कक्षा, मेडिबावी होम, हैदराबाद

शोषण कैसे होता है?

83 फीसदी मामलों में शोषण करने वाले जानकार लोग ही होते हैं। वे बच्चों को उनकी पसंद की कोई चीज खरीदवाने के नाम पर उनसे दोस्ती कर लेते हैं। फिर बातचीत में वे बच्चों के निजी अंगों को छूने लगते हैं। बच्चों को पता होता है कि उनके साथ ऐसा हो रहा है लेकिन वे डर के मारे रोक नहीं पाते।

जांच एजेंसियों, खास तौर पर पुलिस का रवैया कैसा होता है?

बच्चों को यह लगता है कि अगर वे कुछ कहेंगे तो कोई उनकी बात पर यकीन नहीं करेगा क्योंकि वे छोटे हैं। दूसरे, वे बड़ों पर निर्भर हैं और उनके पास पुलिस के पास खुद जाकर शिकायत करने की न तो आजादी है और न ही जानकारी। इसलिए वे शिकायत करने का जज्बा खो देते हैं। आम तौर पर शोषण करने वाले बच्चों के मन में जान का भय डाल देते हैं। उधर पुलिस सुबूत की तलाश में रहती है और उसे वो मिलते नहीं हैं। ऐसे मामलों में मेडिकल परीक्षण के बिना सुबूत नहीं दिखाए जा सकते।

कोर्ट का माहौल कितना अनुकूल है?

भारत में बाल यौन शोषण के ज्यादातर मामले सामने ही नहीं आ पाते। भारत हर मामले में तरक्की कर रहा है लेकिन उतने ही बाल यौन शोषण के मामले भी सामने आ रहे हैं। जब कभी किसी मामले में बड़ी सजा मिलती है तो बहुत सुर्खियों में छाया रहता है और कुछ दिन बाद फिर से वही सब होने लगता है। न्याय मिलने की पूरी प्रक्रिया बहुत लंबी है और कई चरणों से गुजरती है।

काउंसलिंग की प्रक्रिया कितनी कारगर रहती है?

जब बच्चे माता-पिता को घटना बताते हैं तो वे बच्चे की ही गलती दिखाने लगते हैं। वे उससे उलटे सवाल करने लगते हैं—वहां क्यों गए थे, भाग क्यों नहीं गए, वगैरह। इसकी वजाय माता-पिता को बच्चे को भरोसे में लेना चाहिए और उससे कहना चाहिए कि उसकी कोई गलती नहीं है और उसने सबकुछ बोलकर बहादुरी का ही काम किया है। ऐसी किसी घटना के बाद बच्चे पहले ही दहशत में होते हैं। उन्हें उस माहौल से हटाकर खुश रखने की कोशिश करनी चाहिए। काउंसलिंग से उन्हें तसल्ली मिलती है और सामान्य स्थिति में लौटने में मदद भी। अध्यापकों को भी चाहिए कि वे बच्चों को बताएं कि कौन सा स्पर्श अच्छा है और कौन सा खराब और उन्हें कैसे ऐसी स्थितियों से बचना चाहिए।

दुर्गा शेट्टी
आयु: 14 वर्ष, कक्षा: 9वीं, पुणे

मैं यहां पूरी तरह से सुरक्षित हूं

जब मैं 8 साल की थी तब मेरी मां ने मुझे हॉस्टल में भेज दिया क्योंकि वह मेरी देखभाल नहीं कर सकती थी और मेरे लिए सड़क पर रहना सुरक्षित नहीं था। हॉस्टल की कई चीजें मुझे अच्छी नहीं लगती थी।कई बार स्टाफ के लोगों ने मेरी पिटाई की लेकिन यह बात मैंने मां को कभी नहीं बताई। एक दिन मुझे बाथरूम में बंद कर दिया गया क्योंकि मैंने नहाने में कुछ ज्यादा वक्त लिया था जिसकी वजह से मैं देर से स्कूल पहुंची थी। उस समय मैं बहुत भयभीत हो गई। बाथरूम में लाइट नहीं होने से घोर अंधेरा था। मुझे वहां एक घंटे रखा गया। इस घटना के बाद से मैं हॉस्टल में नहीं रहना चाहती थी लेकिन डर के मारे मैंने किसी को इसकी जानकारी नहीं दी। गर्मियों की छुट्टियों में घर लौटने के बाद मैंने अपनी मां को इस घटना के बारे में बताया। मां ने कहा कि वह मुझे हॉस्टल में रहने के लिए बाध्य नहीं करेगी। वह मुझे रेनबो होम ले आई जहां मेरी बहन पहले से थी। मैं रेनबो होम में बहुत खुश हूं और पूरी तरह से सुरक्षित हूं। यहां कोई बच्चे की पिटाई नहीं करता। यहां हम सब बहनों के तरह रहती हैं। मुझे यहां भरपेट भोजन मिलता है,मैं जो चाहूं वह मिलता है। मैं यहां भरपूर आनंद लेती हूं। रेनबो होम जैसी जगह और कोई नहीं है।

Durga Shetty
Age: 14 years, Std: 9th, Pune

THERE IS NO OTHER PLACE LIKE RAINBOW HOME

When I was 8 years old my mother put me in a hostel since she could not care for me and it was not safe for me to live on the street.I did not like many things at that hostel, I was beaten up by the staff on many occasions, but I never disclosed about it to my mother. One day they locked me up in the bathroom because I took longer time to have a bath and got late for the school. I was really scared. I felt very lonely and there was no light in the bathroom.It was all dark. I was kept there for one hour. After this incident I didn't want to stay in the hostel but I did not share this incident with anybody out of fear.

When I went home for summer vacations I informed about the incident to my mother who then told me that she will not force her to stay in a place which she does not like.She brought me to Rainbow Home,my sister was already in Rainbow Home and I was happy to come to Rainbow home. In Rainbow Home I feel safe and free. Here nobody beats any child. Here all of us live as sisters.I get to eat stomach full,I get all the things that I require.I am even a part of summer camp where we are taken for outings. There is no other place like Rainbow Home.

Srabanti Roy Chowdhury
Class-XII, 18 years
Shantirani Rainbow Home, Kolkata

असहाय बच्ची की गुहार कोई नहीं सुनता

कोई भी बच्चा बड़ी उम्मीदें लेकर इस दुनिया में आता है। उसके माता-पिता उसे डॉक्टर र इंजीनियर बनाना चाहते हैं। इसके लिए वे साधन जुटा कर उसे बढ़िया से बढ़िया शिक्षा देना चाहते हैं। बच्चे को सिखाया जाता है कि शिक्षक उनका संरक्षक है और माता-पिता की तरह ही आदरणीय व्यक्ति है। लेकिन जब शिक्षक ही उसका जीवन बर्बाद करने लगे तो क्या होगा ? एक बच्ची को उत्कृष्ट शिक्षा के लिए एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिल कराया गया। कुछ दिनों बाद उसके माता-पिता ने देखा कि दिन प्रतिदिन उसका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। उन्होंने डॉक्टर से बात की। उसने बताया कि उनकी बिटिया का स्कूल में यौन शोषण किया जा रहा है। स्तब्ध माता-पिता ने स्कूल में शिकायत की लेकिन स्कूल ने इस तरह की बात से इनकार कर दिया। माता-पिता को समझ नहीं आया कि इस मामले को कैसे उठाया जाए। अन्य अभिभावकों से समर्थन मिलने के बाद उन्होंने पुलिस में शिकायत की लेकिन कुछ नहीं हुआ। पुलिस ने अपराधी को पकड़ा लेकिन कुछ समय बाद उसे छोड़ दिया गया। अपराधी अब मजे से घूम रहा है लेकिन बच्ची को कोई न्याय नहीं मिला। कभी-कभी मां-बाप बच्चों से यौन-उत्पीड़न पर बात करने में संकोच करते हैं। उन्हें लगता है कि इससे बच्चे के भावनात्मक विकास पर असर पड़ेगा। लेकिन प्रत्येक बच्चे को साधारण स्पर्श और बुरे इरादे से किए जाने वाले स्पर्श के बारे में बताया जाना चाहिए। यौन उत्पीड़न से बच्चे के संपूर्ण विकास पर असर पड़ता है

No one hears the cry of a helpless girl

A child has come to this world with lots of hope. Every parent wants to see their child becoming a doctor or an engineer in future.They gather resources to give their child best education. A child is taught that a teacher is a guardian and most respectful person after his or her parent. But when the teacher spoils a child's life, then?

A child was admitted to a reputed English medium school for her best education. After few months her parents noticed deterioration in her health. Soon they consulted to a doctor who revealed that their child was sexually abused at school. Parents were shocked to hear this news. They complained to the school but the school denied. Her parents became puzzled. They didn't understand how to react at this situation. They raised the voice and got support from the other guardians and complained to Police Station. But nothing happened. Police caught the culprit but after a certain time, he was released. Now the offender is moving freely without any guilt feeling. But the child didn't get any justice.Sometimes parents hesitate to talk with their children about sexual abuse and exploitation. They feel it will affect the normal emotional growth of their child. But every child should be aware about the good and bad touch.

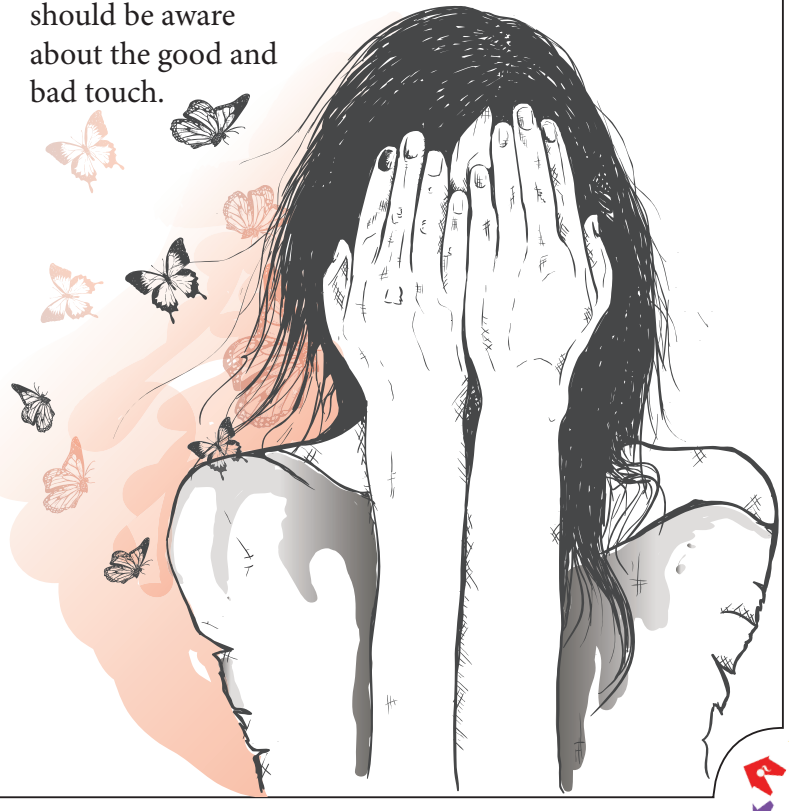

यौन उत्पीड़न के मामलों में संवेदनशीलता दिखाना बेहद जरूरी

कोलकाता के सियालदाह रेनबो होम की 12 वीं कक्षा से संबद्ध सिटीजन जर्नलिस्टों सुभाशश्री पॉल (18) और नजमा खातून (18) ने डीसीपीयू के लीगल कम प्रोबेशन ऑफिसर पार्थसारथी दास से बच्चों के यौन उत्पीड़न के मामलों पर विस्तार से बातचीत की।

सिटीजन जर्नलिस्टों का एक बड़ा सवाल यह था कि बच्चो के साथ यौनाचार के मामलों में सजा की दर कम क्यों है। श्री दास ने कहा, इसके पीछे कई कारण हैं। इस तरह के ज्यादातर मामले बच्चों के अपने घरों में होते हैं या इनमें कोई रिश्तेदार शामिल होता है। परिवार को बदनामी से बचाने के लिए परिवार के सदस्य शिकायत दर्ज नहीं कराते या शिकायत दर्ज करा कर शिकायत वापस ले लेते हैं। कभी-कभी राजनीतिक दबाव होता है या अभियुक्त का परिवार पैसे देकर पीड़ित के परिवार का मुंह बंद करा देता है। ऐसे मामलों में पुलिस के रवैये के बारे ने पूछे जाने पर श्री दास ने कहा कि पुलिस के लिए यह जरूरी है कि वह इस तरह के मामलों को संवेदनशीलता के साथ निपटाए। हर थाने में एक बाल कल्याण अधिकारी होता है जो बाल यौन उत्पीड़न के मामलों से निपटने में प्रशिक्षित होता है। ऐसे मामलों में अदालतें मददगार भूमिका निभाती हैं लेकिन उन्हें सबूत चाहिए। इस तरह के मामलों में बच्चे की कॉउंसलिंग बहुत जरूरी है। डीसीपीयू यह काम करती है। बच्चे और उसके परिवार की कॉउंसलिंग के लिए डीसीपीयू किसी सामजिक कार्यकर्ता या कॉउंसलर को भेजती है। यदि पीड़ित का परिवार आर्थिक दृष्टि से कमजोर है तो सरकार उसे निशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करती है। उसे सरकार से मुआवजा भी मिल सकता है। ऐसे मामलों में मृत्युदंड उचित नहीं है। मृत्युदंड का मतलब जीने का बुनियादी अधिकार छीनना है। बाल यौन उत्पीड़न के मामलों की सूचना शहरों और गावों की बाल सुरक्षा समितियों को दी जा सकती है। स्कूल शिक्षक भी इन समितियों के सदस्य होते हैं। प्रत्येक जिले में बाल कल्याण समिति भी होती है। शिकायत के लिए 1098 के जरिए चाइल्ड लाइन पर संपर्क किया जा सकता है। सिटीजन जर्नलिस्टों ने एक महत्वपूर्ण सवाल बलात्कारी के मनोविज्ञान के बारे में पूछा। इसके जवाब में श्री दास ने कहा कि हम कभी भी इस पक्ष पर विचार नहीं करते। बलात्कार या सामूहिक बलात्कार में शामिल लोग सामान्य लोग नहीं होते। उनमें कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याएं होती हैं। बच्चो के लिए बलात्कारी के व्यवहार को समझना मुश्किल है लेकिन माता-पिता उसे अच्छी नीयत और बुरी नीयत से किए जाने वाले स्पर्श में भेद करना सीखा सकते हैं।

Citizen Journalists Subhashree Paul (18) and Nazma Khatoon (18) from Sealdah Rainbow Home(Class-XII) talk to Mr. Partha Sarathi Das, Legal cum Probation Officer, DCPU regarding child abuse cases.

Why conviction rate is so low in child abuse cases ?

There are several reasons for this .It has been observed that most of the child sexual abuse had taken place within child's own home or by an own relative. So to protect the family name, family members don't lodge complaint. if they manage to lodge a complaint , there is a tendency to withdraw it.Sometimes they withdraw the complaint due to political pressure or the accused family had given lots of money to the victim's family.

What is general attitude of investigating agencies, especially police ?

Generally, the police needs to deal this kind of case very sensitively. And in every police station there is a police officer called Child Welfare Officer who is a trained person to deal child sexual abuse cases. CWO used to handle these cases with civil dress. In every police station has a child friendly corner.

How much supportive are courts ?

Yes, courts are playing supportive role to these cases. But court only believes the evidence produced there. In between if somebody changes it then responsibility doesn't come to the court.

How much supportive is counselling process ?

In child sexual abuse cases, providing counselling support to the child is very important. DCPU gives this service to the children. DCPU sends social worker or counsellor to counsel the child as well as the family members.

How does family of victim sustain ?

If any family lodge a complaint of child sexual abuse, then government has a policy to provide free legal aid service if the family is financially poor. And the victim family also can get compensation money from the government.

How dangerous is death penalty ?

Death penalty is very dangerous because this is a matter of some body's life. By giving death penalty we are taking one's basic right to live.

If protector of society are associated with child sexual abuse, then where the common people or village people will go ?

Now there are many places where child or his/her family members can go. In cities, there is ward level and bloc level child protection committee.In village there is village level child protection committee. Now school teachers are also part of these committees , they also can be informed about any sexual abuse case. Every district has Child Welfare Committee and any one can reach to Child Line through 1098. If any victim or his/her family members has the will to lodge a complaint there are ways to do it.

What is the psychology of a rapist ?

This is a very intelligent question. We never think from this perspective. Yes, who are associated with rape or gang rape are not normal people. They possess some psychological problem. And these kind of psychological problems grow in the human being due to many reasons.

How a child will understand rapist behaviour ?

No, the child will not understand rapist behaviour. But parents can make the child understand about good touch and bad touch. And also parents can build a good relationship with the child, so that he/she can share everything to their parents.

बरतें हमेशा एहतियात खुद को शोषण से बचाने के लिए

पुणे में तीन होम्स (स्नेहघर / यरवदा / कांग्रेस भवन) के बच्चों ने इकठ्ठा हो कर लड़कों और लड़कियों द्वारा झेले जाने वाले यौन उत्पीड़न को समझा और एक दूसरे से कुछ इस तरह के सवाल पूछे।

प्रश्नः क्या तुमने लड़कों द्वारा लड़कियों को छेड़ते हुए देखा है?
उत्तरः हां।

प्रश्नः तुमने लड़कों द्वारा लड़कियों को छेड़ते हुए कहां देखा है?
उत्तरः बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन के पास, सडकों पर बगीचों के पास और सुनसान जगहों पर।

प्रश्नः लड़के किस तरह से लड़कियों को छेड़ते हैं?
उत्तरः सीटियां बजा कर ,आंख मार कर,सड़कों पर लड़कियों का पीछा करके या उन्हें सड़कों पर देख कर जोर-जोर से हॉर्न बजा कर। यदि वे लड़की को अकेले देख लेते हैं तो उसे जबरदस्ती पकड़ने की कोशिश करते हैं।

प्रश्नः लड़कों द्वारा छेड़े जाने पर कैसा लगता है?
उत्तरः इससे आहत होते हैं। खुद को कोसने जैसा लगता है। लड़कों को पीटने का मन करता है। गुस्सा आता है। कभी-कभी इसमें मजा भी आता है।

प्रश्नः किसी लड़के द्वारा झेड़े जाने पर क्या तुम भयभीत होती हो ? तुम्हें किस बात से डर लगता है
उत्तरः हां, बलात्कार और अपहरण का डर लगता है।

प्रश्नः क्या लड़के का भी यौन उत्पीड़न हो सकता है?
उत्तरः हां।

प्रश्नः क्या तुमने इसका अनुभव किया है या ऐसे किसी लड़के को देखा है जिसका यौन उत्पीड़न हुआ हो?
उत्तरः हां।

प्रश्नः लडकों का यौन उत्पीड़न कौन लोग करते हैं?
उत्तरः बड़ी उम्र के लड़के, रिश्तेदार और परिवार के सदस्य।

प्रश्नः जब कोई लड़का तुम्हें छेड़ता है या तुम्हारे साथ जोर-जबरदस्ती करता है तब तुम क्या करोगी ?
उत्तरः हम मदद के लिए चिल्लाएंगे। आत्म रक्षा के तरीके आजमाएंगे, काट खाएंगे, भागने की कोशिश करेंगे तथा अभिभावकों, शिक्षकों और होम स्टाफ जैसे भरोसेमंद लोगों को घटना के बारे में बताएंगे। हम मदद के लिए 1098 चाइल्डलाइन और पुलिस से सहायता के लिए 100 नंबर पर संपर्क करेंगे।

प्रश्नः लड़कों द्वारा छेड़े जाने से बचने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?
उत्तरः हमेशा ग्रुप बना कर बाहर जाएं, घर से बाहर जाने से पहले वरिष्ठ लोगों को सूचित करें और सुनसान जगहों पर जाने से बचें।

We feel like cursing ourselves when boys tease us

Pune Children from all the 3 homes (SnehGhar / Yerwada / Congress Bhavan) came together to understand about abuse faced by boys and girls and they asked each other the following questions.

Q: Have you ever seen boys teasing girls?

A: Yes.

Q: Where have you seen boys teasing girls?

A: Near bus stand,railway station,near gardens on the streets, in lonely places.

Q: How do boys tease girls?

A: By whistling, winking, following girls while they are walking on the street, honking loudly while girls walk on the street. If they see a girl alone they try to forcefully take her.

Q: How does it feel when boys tease?

A: It hurts, feel like cursing on-self, feel like beating up the boys, feels irritating, sometimes its enjoyable.

Q: When a boy teases you do you get scared ? What makes you feel scared?

A: Yes, makes one feel scared of being raped and abused, abducted.

Q: Can abuse happen to a boy?

A: Yes.

Q: Have you experienced or seen any boy who has faced abuse?

A: Yes

Q: Boys are usually abused by whom?

A: By older boys, relatives,family members.

Q: What will you do if a boy teases or tries to abuse you

A: Will shout for help, use self defence techniques, will bite, try to run away and share with people whom we trust such as parents, teachers, Home staff. Will call1098 Childline for help, 100 for policer help.

Q: What preventive measures should be taken to avoid being teased by boys ?

A: Always go out in groups, inform elders before leaving home, avoid going to lonely places.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

I LEARNT MANY THINGS FROM RAINBOW SATHI

Amina Khtoon
class-12, 19 years
Loreto Bow Bazar, Kolkata

I learnt many things after reading Rainbow Sathi.Earlier I used to think that I am the most deprived child in the world. But after reading the magazine,I realised that there are many children whose condition is worst than me.I also learnt that we should try to appreciate whatever we have.Through this magazine I came to know that other states also have Rainbow Homes and many children are staying there.We are very lucky to be part of Rainbow Sathi magazine. Parents and children used to think that there is no future after completion of class-XII.But now we know Rainbow Home will support us to fulfil our dream.I observed many Kolkata girls had got opportunity to write in the magazine and their photographs also appeared.Now many girls are enthusiastically writing articles, so that their writing is published in the magazine.I wish to thank Rainbow Sathi because of this magazine every one can share their feelings. Through this they are able to recognise their writing talent. After reading this magazine I didn't feel anything bad there.Infact, everyone came to know each other through this magazine.

रेनबो साथी से मैंने बहुत सी बातें सीखीं

रेनबो साथी से मैंने बहुत सी बातें सीखीं हैं। मुझे लगता था कि मैं दुनिया की सबसे ज्यादा वंचित बच्ची हूं। पत्रिका पढ़ने पर पता चला कि ऐसे बहुत से बच्चे हैं जिनकी हालत मुझ से भी बदतर है। पत्रिका से मैंने सीखा कि जो कुछ भी हमारे पास है उससे हमें खुश होना चाहिए। रेनबो साथी पत्रिका से जुड़ना हमारा सौभाग्य है। बच्चे और माता-पिता पहले यह सोचते थे कि 12 वीं कक्षा पूरी करने के बाद कोई भविष्य नहीं है लेकिन अब हम यह जान गए हैं कि रेनबो होम हमें अपने सपनों को साकार करने में मदद करेगा। मैंने देखा कि कोलकाता की कई लड़कियां पूरे उत्साह के साथ पत्रिका के लिए लेख लिख रही हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हर कोई अपने विचारों को साझा कर सकता है।इसके लिए मैं रेनबो साथी को धन्यवाद देती हूं। इस पत्रिका के जरिए बच्चों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने और एक-दूसरे को समझने का अवसर मिला है।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Prayer | प्रार्थना | ప్రార్థన

God!

Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

ईश्वर अल्लाह

हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

దైవమా!

సృష్టిలో బాగంగా మాకిచ్చిన ఈ అందమైన జీవితం కోసం నీకు ధన్యవాదాలు!

మేమెంతా నిర్భయంగా తలెత్తుకొని ఆత్మాభిమానాలతో, పరస్పర గౌరవాలతో స్నేహంగా బ్రతకాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

స్త్రీలైనా, పురుషులైనా, వారి రంగు, కులం, మతం, వర్గం, సామర్ధ్యం, బాషా ప్రాంతం, ఏదైనా, మనుష్యులందరమూ సమానమేనని, నవ్వుతూ జీవించాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మమ్మల్ని విడదీసే ద్వేషపూరిత శక్తులను, సిద్ధాంతాలను బలంగా వ్యతిరేకిస్తున్నాము. ఇతరులకి జరిగిన అన్యాయాన్ని మాకే జరిగిందని భావిస్తూ, మానవత, న్యాయం, సత్యం, శాంతి, అహింస, ప్రజాస్వామ్య విలువలును నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మరింత మానవీయ స్వేచ్ఛా ప్రపంచ నిర్మాణంలో, ఆరోగ్యంగా ఆడుతూ, పాడుతూ, జ్ఞానాన్ని పెంచుకొంటూ, పంచుకొంటూమేము సైతం అంకితమవ్వాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము..!

దైవమా!

అనాదిగా సాగుతున్న, ఈ దివ్య ప్రేమపూరిత యాత్రలో, లక్షలాదిమందితో మా చిన్ని చేతులను కూడా కలపాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము...!

NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

Rainbow Homes Program

Rainbow Homes
EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

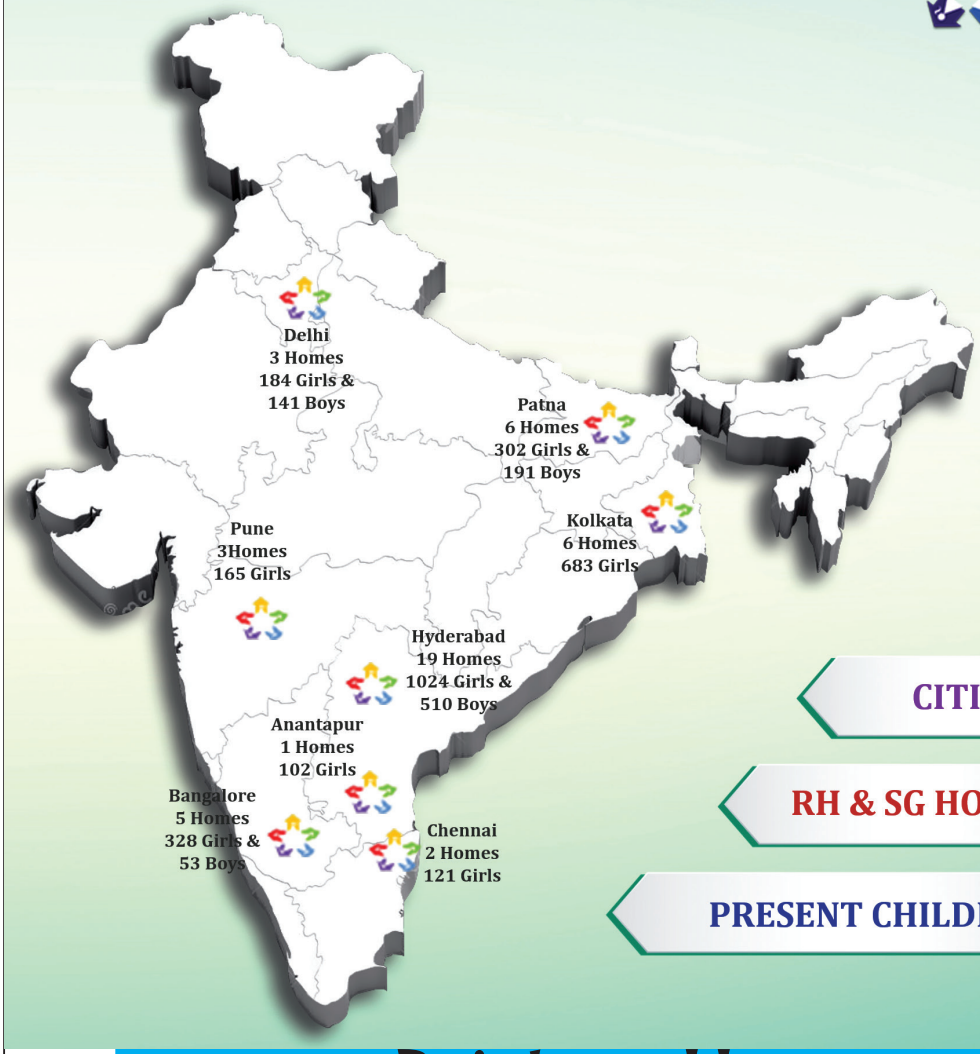

CITIES	8
RH & SG HOMES	45
PRESENT CHILDREN	3804

Rainbow Homes

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656